CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाराणसीस्थ आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्यपीठाचार्य

जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य-रामपूर्वाचार्य

योगीन्द्र प्रवर्तित विश्राम द्वारकास्थ श्रीसीतमठ संचालित

ज.गु.श्री रामानन्दाचार्य-पीठ

सचित्र धार्मिक मासिक

संरक्षक– शेठ श्री अमरशी कुरजी मजिठिया

सम्पादक– स्वामी रामेश्वरानन्दाचार्य

सहसम्पादक– पं. शरच्चन्द्र शास्त्री

मायावादिकुतर्कजालरचितव्याख्यानसंमूर्छितां
यो व्याख्यासुधयात्रयीं भगवतीं सञ्जीवयन् राजते ।
तस्याचार्यशिरोमणेर्विजयिनो वादाह्वे श्रीमतो
रामानन्दमुनेर्वचोऽखिलजगत्क्षेमायसञ्जायताम् ॥
(जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यरघुवराचार्याः)

कार्यालयः श्रीकोसलेन्द्र मठ, सरखेज रोड, पालडी,
अहमदाबाद–३८०००७

वर्ष ५ विक्रमाब्द २०४० अंक १२

श्रीरामानन्दाब्द ६८४ १ फरवरी १९८४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(पेज १६ का शेषांश)
सर्व नियन्ताको अपने हृदयका अधिदेव मानना ही सिद्ध होता है। ऐसे परमपवित्र वैष्णवों से तीर्थ भी पवित्र होते हैं।

इस भगवान् की सत्ता चराचर में व्याप्त है। अतः उस विश्वनियन्ता के अनुकूल ही उसके शेष स्वरूप इस जीवको संकल्प करना चाहिये। यह प्रथम प्रपत्ति है।

२ प्रातिकूल्य का वर्जन करना यह द्वितीय शरणागति है। इसका तात्पर्य यही है कि भगवत् प्रतिकूल जो देश, काल, कर्म और स्वभाव आदि हैं उनका वर्जन कर देना। सर्वथा सर्वदा सर्व प्राणियोंमें हिंसादि दुराचरणोंको छोड़कर भगवन्मनस्क होना।

३ भगवान् मेरा अवश्य रक्षण करेंगे, यह विश्वास रखना, यह तृतीय शरणागति है। भगवान् परमकृपालु है। और मैं उनका अनुकूल हूं। वह मेरे स्वामी है मैं उनका दास हूं। मेरी रक्षा की योग्यता सर्वेश्वर भगवान् श्रीरामजी में पूर्णतया है। अतः वह करुणालयभक्तवत्सल मेरा रक्षण अवश्य करेंगे, इस प्रकार का विश्वास तृतीय शरणागति है।

४ भगवान् को अपना रक्षकतया स्वीकार करना चतुर्थ शरणागति है।

अर्थात् भगवान् करुणासागर हैं और समस्त प्राणियों के स्वामी हैं। एवं सर्व विध सामर्थ्य रखते हैं। वह विना प्रार्थना

(शेष ट. ३ पर)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आचार्यपीठों में

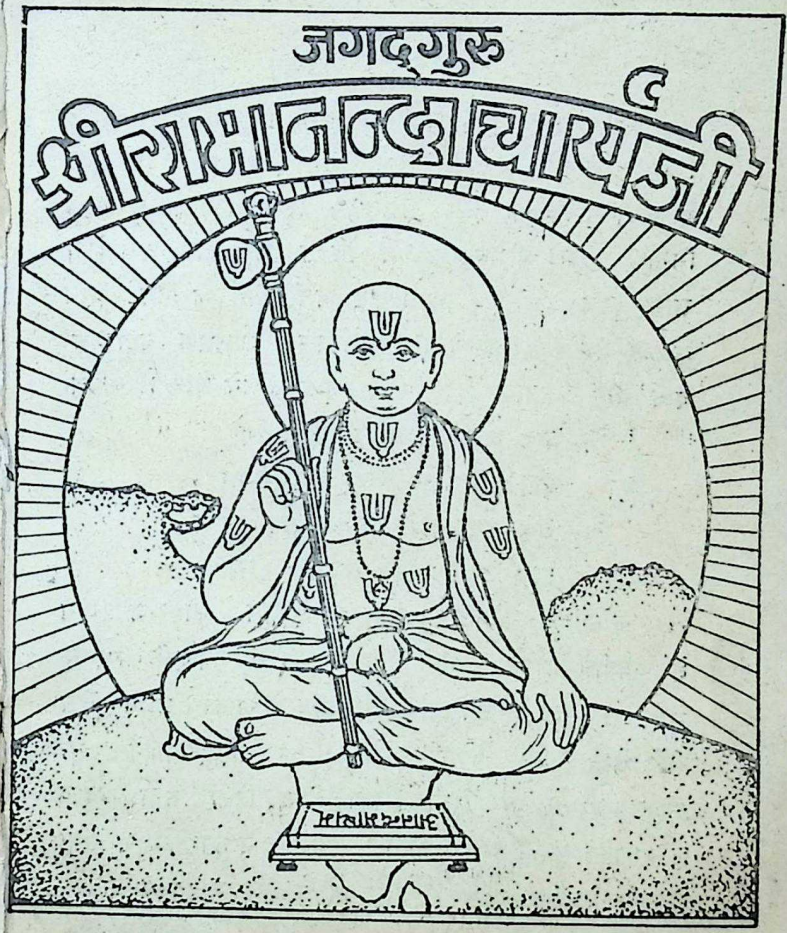

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्यजी का ६८४ वीं जयन्ती सानन्द संपन्न

"रामानन्दः स्वयं रामः पादुर्भूतो महीतले"

इस आगम उक्ति के अनुसार आचार्य श्री का अवतार वि० १३५६ माघ कृष्ण सप्तमी को हुआ था। उस समय भारतकी सांस्कृतिक तथा राजनैतिक स्थिति डामाडोल थी। निरीह हिन्दुओं को बलात्—धर्म परिवर्तन कर यवन बना देना सामान्य बात थी। उस विकट परिस्थितिसे भारतीय स्वरूप का संरक्षण करना अन्य किसी साधारण व्यक्तिके बहार को बात थी। अतः सर्वेश्वर श्री रामचन्द्र जी ने अपनी प्रतिज्ञा

जब जब होई धरम कै हानि
बाढहिं विविध असुर अभिमानी।
तब तब धरि प्रभु विविध शरीरा
हरत दया निधि सज्जन पीरा॥

के अनुसार स्वयम् श्री रामानन्द के रूप में तीर्थराज प्रयाग में अवतीर्ण होकर अपनी सनातन वैदिक मर्यादाके रक्षणके साथ साथ खल दमन किया। उस समय में आचार्य श्री ने युक्ति रीति तथा नीतिसे वैदिक मर्यादाका रक्षण न किया होता तो आज पृथ्वी तल पर भारतीय संस्कृति हिन्दु, हिन्दी, तथा हिन्दुत्व इतिहासके पृष्ठमें ही रह जाता। आजके मानव को भारतीय संस्कृति के इस स्वरूपके दर्शन या अनुभव नहिं हो पाता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विगत वर्षों की भाँति इस वर्षमें भी आचार्यश्री की जयन्ती उत्सव विशेष समारोह के साथ माघ-कृष्ण सप्तमी मंगल बार ता० २४. १. ८४ को मनाई गई। प्रातः पुरुषसूक्त आदि के विधान से आचार्य श्री का पूजन, स्तुति प्रार्थना आदि संपन्न हुई। अपराह्न में सामयिक उपदेश प्रवचनादिका आयोजन था। इन सभी कार्योंमें पश्चिमाम्नाय श्री रामानन्दाचार्य पीठ संचालित श्री रघुवर रामानंद वेदान्त महा विद्यालय के आचार्य तथा छात्रों ने सोत्साह भाग लिया।

श्रीयतिराजमङ्गलपञ्चकम्

वशिष्ठगोत्रोत्पन्नाय पुण्यसदनसूनवे ।
कान्यकुब्जावतंसाय यतिराजाय मङ्गलम् ॥१॥
शक्तिपराशरेत्यादि त्रिप्रवरयुताय च ।
शुक्लयजुः सुविज्ञाय यतिराजाय मङ्गलम् ॥२॥
माध्यान्दिनीयशाखीय वेदाध्ययनशालिने ।
शिखादक्षिणपादाय यतिराजाय मङ्गलम् ॥३॥
बोधायनीयधर्मस्य सूत्राचरणवेदिने ।
औतकात्यायनीयस्य यतिराजाय मङ्गलम् ॥४॥
प्रस्थानत्रयभाष्येण भवरोगापहारिणे ।
अनेकशिष्यशिष्याय यतिराजाय मङ्गलम् ॥५॥
श्रीरामानन्दशिष्येणानन्तानन्देन निर्मितम् ।
मङ्गलपञ्चकं भूयात् सर्वमङ्गलकारकम् ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रधानाचार्य पीठ शंकुधारा, वाराणसी पश्चिमाम्नाय श्री रामानंदाचार्य पीठ, श्री शेषमठ सौराष्ट्र तथा अन्य प्रमुख श्री रामानंदीय आश्रमों में आचार्य जयन्ती उत्सव सानंद संपन्न होने का समाचार है ।

श्री विश्राम-द्वारिकाधीशजी के नवीन मंदिर का १०४ वां पाटोत्सव

पौराणिक तीर्थ भगवान श्री कृष्ण ऋषीश्वर शृंगी तथा सुदामाजी के विश्राम स्थल प्रसिद्ध तीर्थ श्री विश्राम द्वारकाधीश

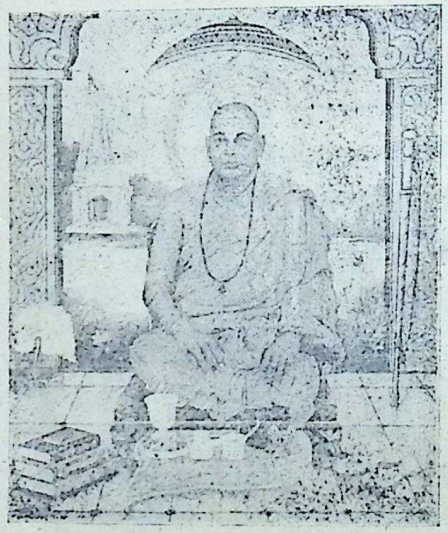

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य रघुवराचार्य श्रीवेदान्तीजी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जी के नवीन मंदिर का १०४ वाँ पाटोत्सव ता. ७. २. ८४ से ता. १३. २. ८४ तक विशेष आयोजन के साथ मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष में श्री विश्राम द्वारकाधीश की शोभा यात्रा, श्रीमद्भागवत पारायण प्रवचन, एकाह श्री रामयाग आदि कार्य क्रमों का आयोजन है।

:- श्री साकेत गमनोत्सव :-

श्री रामानंद सम्प्रदाय के ३९वें आचार्य अप्रतिद्वन्दी जगद् विजयी श्री महामहोपाध्याय जगद् गुरु श्रीरामानन्दाचार्य रघुवराचार्यजी का साकेत गमनोत्सव माघ शुक्ल पञ्चमी के दिन विशेष समारोह के साथ मनानेका आयोजन है प्रकृत उपलक्ष्य में विश्राम द्वारिका तीर्थ स्थान निवासी समस्त बालकों को भगवत्प्रसाद सेवन करानेकी प्रणाली है। प्रसंगोपात्त संत-महत तथा विद्वानों का भी यथोचित सत्कार उस प्रसंगमें किया जाता है। आचार्य विग्रह की वैदिक विधानानुसार पूजन प्रार्थना, प्रासंगिक प्रवचनादि की विशेष व्यवस्था रहती है।

आचार्य जयन्ती

श्री राम नंद संप्रदाय के २४ वें आचार्य अप्रति द्वन्द माहवे वाली उक्ति को अक्षरम शास्त्र और शस्त्र दोनोमें चरितार्थ करनेवाले अनुभवानन्दाचार्य नामक श्री रामानन्दाचार्यपीठ के संस्थापकाचार्य जगद्गुरु श्री अनुभवानन्दाचार्यजी की जयन्ती माघ शुक्ल पंचमी ता. ७-२-८४ को विशेष आयोजन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के साथ पश्चिमाम्नाय श्री रामानन्दाचार्य पीठ श्री शेषमठ शींगडामें मनायी जा रही है। जिसकी तैयारी विश्रामद्वारका तीर्थ निवासी श्री गोपाल सत्संग मंडल के सदस्येां के द्वारा की जा रही है।

—: मोतियाबिंद का सफल ओपरेशन :—

अनन्त श्री विभूषित जगद् गुरु श्री रामानदाचार्य रामप्रपन्नाचार्यजी योगीन्द्र के दक्षिण नेत्रमें मोतिया बिन्द का ओपरेशन आवश्यक था। अनेक सहृदय भाविक सेवकों की इच्छा थी कि अहमदाबाद में ओपरेशन हो। इसी उद्देश्य से पश्चिमाम्नाय श्री रामानंदाचार्य पीठ श्रीशेषमठ के मेनेजर श्री अमरशी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

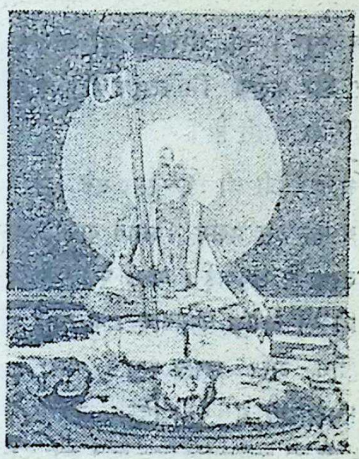

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यराजत्रप-
न्नाचार्य श्रीयोगीराजजी

कुरजी मजिठीया के साथ दि. ६-१२-८३ को काशी के लिए कार द्वारा प्रस्थान किया।

दि० ८-१२-८३, को आचार्य श्री का दर्शन आचार्य पीठ वाराणसी में किया। चर्चा-विचारणा के परिणाम स्वरूप यह निश्चित हुआ कि आचार्य पीठ में ही चिकित्सा की जाय, क्योंकि आचार्य श्री ने अहमदाबाद जाकर चिकित्सा कराने की अनिच्छा व्यक्त की अतः वाराणसी के आंख, कान, नाक, गला के चिकित्सामें विशेषख्यात नाम डॉ ऐस. पी. श्रीवास्तव जी का संपर्क

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साधकर दि. १३-१२-८३ मंगलवार का मोतियाबिंद का ओपरेशन किया गया। डां. श्रीवास्तवजी अत्यन्त सरल स्वभाववाले मिलनसार और कुशल चिकित्सक हैं। आप प्रायः पारमार्थिक कार्य ही किया करते हैं।

आपने आचार्य श्री की चिकित्सा बडे ही मनोयोग तथा उत्साह के साथ की उस प्रसंग में लगने वाली समस्त दवायें भी उन्होने अपने तरफ से लगवाई। अतः ऐसे परम अर्थ परायण डां० श्री श्रीवास्तव जी का अनेक धन्यवाद। आचार्य श्रीका मोतिया बिंद का ओपरेशन अति सफल रहा। अतः आचार्य श्री की सर्वेश्वर श्री सीतारामजी से यही दिव्य कामना है कि डां० श्री श्रीवास्तवजीको श्री की अभिवृद्धि दिन-दूनी रात-चौगूनी हुआ करे

ध्यान दें? आचार्यश्री की अहमदाबाद आनेकी संभावना थी अतः अनेक संपर्क या दर्शनाभिलाषी व्यक्ति आचार्य पीठ अहमदाबाद में संपर्क स्थापित करते है। उन्हे चाहिए कि आचार्य श्री का संपर्क आचार्यपीठ शंकुधारा वाराणसी में ही स्थापित करें।

विधिका विचित्र विधान या कर्म फल भोग?

यह पूर्वमें चर्चित है कि आचार्य श्री के चिकित्सा के प्रसंग में मैं वाराणसी गया था, पर स्वतः प्रबल अस्वस्थ हो गया। दि० १३,१४ तथा १५-१२-८३ के दिन यमदूतों के साथ संघर्ष करते हुये व्यतित किया। काशी के कितने ही अभिभावकों की इच्छा थी कि काशी में ही शल्यक्रिया की जाय पर हमारी

National Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इच्छा नहीं थी। अतः श्री रामकृष्ण मिशन द्वारा संचालित दवाखाना के कुशल चिकित्सक डां० श्री वर्माजी से प्राथमिक उपचार करवाकर अहमदाबाद तक पहूँचने का साधन (नली) की व्यवस्था करवाकर दि० २१-१२-८३ के रात्रि को आचार्य पीठ अहमदाबाद में आ पहूँचा। दि० २२ को यहाँ के विशेषज्ञों से संपर्क स्थापित कर चर्चा करनेपर विशेषज्ञों का मत हुआ कि शल्यक्रिया आवश्यक हैं। अतः दि. २४-१२-८३ शनिवार को शल्यक्रिया करवाई गई। अहमदाबाद के प्रसिद्ध चिकित्सक श्री आर. एम. शाह के निर्देशन में प्रसिद्ध सर्जन डां श्री मनोज शाह के नीजा होस्पिटल में सफलता पूर्वक ओपरेशन हुआ। दि. २-१-८४ को रुग्णालय से अवकाश प्राप्तकरके आचार्य पीठ में आया हूं। अब धीरे-धीरे शरीर स्वस्थ होता जा रहा हैं सूचिका प्रयोग (इन्जेकशन) तथा गोली आदीको उपचार सतत चालू है। विशेषज्ञों की अनुमति है कि दो-तीन महिना तक आराम करे बौद्धिक तथा शारीरिक श्रमों से दूर रहे।

मेरे रुग्णालय के आवाश कालमें रात दिवस सर्वदा रहकर सेवा करनेवाले श्रीअमरसिंह सोलंकी (मोडासर) तथा श्रीअशोक कुमार व्यास धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होने अपने समस्त कार्यों को छोडकर मेरी सेवा की। शल्य क्रिया के दिन वहाँ उपस्थित श्री लक्ष्मशंकर भट्ट शेठ श्री रघुनाथ बावचन्द तन्ना तथा उनके परिवार के सदस्य, श्री जयन्तिभाई दवे श्री

Nepal Sanskrit University, Bahumukhi Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हीराभाई प्रभृत्ति सद्गृहस्थों को अनेकधन्यवाद । सत्संग मंडल की श्रीमं गुबहेन प्रभृति माताओं को विशेष धन्यवाद जिन्होंने मानसिक सहानुभूति के साथ आर्थिक सहायता भी प्रदान की ।

श्री मती कमला बहेन पण्ड्या तथा श्रीमती रेणुका बहेन शास्त्री तथा श्रीमती मीरा बहेन तथा श्रीमती ज्योत्स्ना बहेन प्रवृति बहेनों को भी अनेक धन्यवाद, जिन्होने आर्थिक सहायता के साथ अनेक प्रकारकी सहायता पहुंचाई । श्री रघुवर रामानन्द वेदान्त महाविद्यालय के अन्तेवासी श्री विदुरप्रसाद शर्मा श्री कुलशेखर शर्मा तथा अन्य छात्रों ने जिस किसी भी रूपमें हमे सहायता पहुंचाई उन्हे अनेक धन्यवाद ।

आचार्यपीठ के स्नातक मानार्ह अध्यापक निःस्वार्थ सेवाभावि शास्त्री श्री शरच्चन्द्रजी को अनेकानेक धन्यवाद । जिन्होने अपने समस्त कार्यक्रमों को छोड कर मेरे उपचार के लिए कोई भी कसर नहीं छोडा ।

आचार्यपीठ द्वारा संचालित श्री योगेश्वर धर्मादा औषधालय के निःस्वार्थ सेवाभावी कुशल चिकित्सक डॉ. भरतभाई भडियादरा तथा डॉ. संदीपभाई दवे धन्यवाद के पात्र हैं जो रात दिन कभी भी आवश्यकतानुसार सेवा में उपस्थित हो जाते रहे ।

मेरे अस्वस्थता के समाचार सुनकर अनेक आचार्य सन्त महन्त विरक्त सद्गृहस्थ सज्जन भाई बहेन वगेरे जो कोई भी

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

औषधालय में अथवा आचार्यपीठ में कुशलता जाननेके लिए आते–जाते रहे है या अनेक विध पत्र लिखे हैं उन सभी सहृदय बन्धुओं को अनेकानेक धन्यवाद । अन्त में सर्वेश्वर श्री सीतारामजी से यही मंगल कामना करता हूँ कि प्रत्यक्ष या परोक्ष में मेरी इस रुग्णावस्था में जिस किसी भी प्रकार की सहानुभूति, सहायता या कोई भी प्रकार की मंगल कामना प्रगट की हों उन सभी व्यक्तियों को श्री संपन्न करदें ।

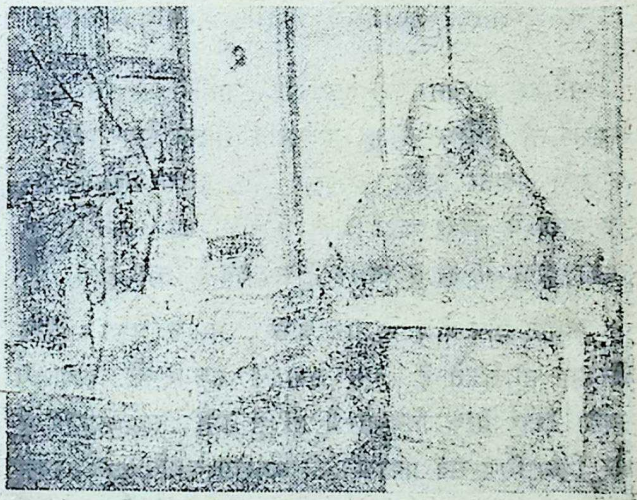

पश्चिमाम्नाय श्रीरामानन्दाचार्यपीठाधीश्वर
स्वामीरामेश्वरानन्दाचार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रमागत—अं. ११ पे. ७ से आगे

ईश्वरस्त्वहमेवात्र सर्वेशस्तु सनातनः
सर्वव्याप्तावबोधात्मा ह्यानंदाकारसंयुतः ॥५॥
अनन्तः सगुणः साक्षी शास्ता सर्वस्य धारकः ।
स्वाधीनसर्वव्यापारः श्री भू लीलाधिपः प्रभुः ।६।
दिव्यलावण्यसौन्दर्यसंयुक्तः शुभविग्रहः ।
एतज् ज्ञात्वा जनाः सर्वे प्रयान्ति परमं पदम् ॥७॥

सर्वेश्वर भगवान् श्री नारदजीसे कहते है कि इस ईश्वर परामर्शमें तो सर्वेश्वर मैं ही हूं अर्थात् सबका ईश्वर प्रेरकधारक सत्ता प्रदाता मुझको छोडकर कोई दूसरा नहीं है कुछ कुछ अशों के ईश्वर जहाँ तहाँ और भी हो सकते हैं पर सबका ईश्वर मैं ही हूं क्योंकि मैं सनातन सर्वेश्वर हूं ।

अर्थात् बीच बीच में कोई थोडे से भागके प्रेरक मालिक और भी हो सकते हैं । पर सनातन सब दिनसे अद्यावधि सबका ईश्वर प्रेरक नियन्ता मै ही हूं । मैं सर्व व्यापक हूं और नित्य सिद्ध सर्व प्रकाशन जो अववोध अर्थात ज्ञान तदरूप हूं तथा आनन्दमय आकार कर, पाद, मुखोदरादि से संयुक्त हूं और मैं अनन्त हूं और मेरे गुण स्वरूप नाम लीला आदि का अन्त नहीं है अतः मैं अनन्त हूँ और सगुण अर्थात ऐश्वर्य

Nepal Sanskrit University, Bamdeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri.Funding: MoE

धैर्य स्थैर्य माधुर्यादि दिव्य अनवधिक निरतिशय असंख्येय गुण मेरेमें हैं और सबका साक्षी हूं । अर्थात् समस्त कर्म तथा अन्य व्यापारों में प्रवृत चेतनोंके सर्व कर्मोंका द्रष्टा मैं ही हूँ और शास्ता सबके शासन करनेवाला सूर्यादि ब्रह्मादि सब मेरे आज्ञामें चलते हैं ।

सर्वस्य धारकः चिदचिन्मय यावत् प्रपंच है जो कि अनेक ब्रह्माण्ड अनेक रचना से युक्त हैं । उन सवों का धारक सत्ता प्रदाता मैं ही हूँ । और स्वाधीन सर्वव्यापार ईश्वर का सब व्यापार अपनें ही आधीन है । तात्पर्य यह है कि हमसे अतिरिक्त जितने ब्रह्मादि देव हैं वा अन्य चेतन हैं वे सब अपने अपने कर्मों के परतंत्र है उनका स्वरूपसत्ता प्रवृत्ति ईश्वराधीन है इसीसे वे स्वाधीन व्यापारवाले नहीं कहे जाते हैं ईश्वर उन सभीसे विलक्षण है, अतः उसका सर्व-व्यापार अपने ही आधीन है, भाव मैं स्वतंत्र हूँ और सब परतंत्र हैं तथा श्री भूलीलाधिपः श्री शक्ति भू शक्ति लीला शक्ति इन सवों का भी अधिप अर्थात् अधिकृत्य पालन कर्ता मैं हूँ तात्पर्य यह है कि श्री देवीजी सर्व शक्तियों की प्रेरिका हैं, और सब ऐश्वर्य स्थिर है तथा भू देवी सब की सत्ता प्रदात्री है अर्थात् सबकी सत्ता इन्हीं के अधिन है इसी तरह लीला शक्ति भी सर्व व्यापारों की प्रवर्त्तिका हैं अर्थात् सर्व-देव शिरोमणि ब्रह्मरुद्रइन्द्रादि इनके व्यापार की सत्ता भी

Nepal Sanskrit University, Balmiki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लीला देवीजी के आधीन है इस प्रकार की श्री भू लीला ये दिव्य शक्ति सब जगत की प्रेरिका हैं उनका भी मालिक प्रेरक मैं ही हूँ, क्योंकि प्रभु सबको अपनी सत्ता के भीतर प्रेरणा से रखने वाला हूँ और दिव्य लावण्य सौंदर्य्य संयुक्त शुभ विग्रहवाला मैं हूँ अर्थात् मेरा विग्रह दिव्य है प्राकृतगन्ध से रहित है और जैसे मोती का तरलपना है वैसे ही सर्वाङ्ग में दर्शन करनेवालों को क्षण क्षणमें नवीन नवीन शोभा दिखानेवाला तरलपनां प्रयुक्त तथा सौन्दर्य सर्वसुन्दरता का समावेश जिसमें हो उसे सौन्दर्य कहते हैं मेरे विग्रह के समान सौंदर्य्य किसी में नहीं है उस दिव्यलावण्य सौन्दर्य्य सहित शुभ विग्रहवाला मैं हूँ एक वार चिन्तवन करने वालों के सर्व अशुभो का नाशक सर्व शुभास्पद मेरा विग्रह है इससे नित्य विग्रहवान् अपनेको सूचित किया । श्री रामजी कहते हैं कि इस तरहसे चित् अचित् ईश्वर इन तीनों तत्वोंको जान करके अर्थात् इन तीनों तत्वोंके यथार्थज्ञान होने से सब चेतन परमपदके अधिकारी हो सकते हैं । तात्पर्य यह है कि माया का स्वरूप आत्मा का स्वरूप और ईश्वर का स्वरूप जानने से ही सभी जीव परमपद को प्राप्त हो सकते हैं इससे ज्ञान को मुक्ति का कारण लिखा वह इन्हीं तत्वों का ज्ञान जानना चाहिए इन्हीं तीन तत्वों के ज्ञान से जीव संसार से छूट कर परमपद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का अधिकारी होता है, इस ईश्वर तत्व को भी पूज्य आचार्य्यों ने पंचधा कहा है एक पर जो कि विरजा पार परमपद में नित्यमुक्त जीवों के भोग्य भूत होकर सदा आनंदमयी लीला को करते है दूसरे व्यूह जो सृष्टि के उत्पत्ति पालन संहारार्थ चार रूप होकर आमोद प्रमोदादि लोकों में रहकर संसारतंत्र का निर्वाह करते हैं तीसरे विभव अर्थात् अवतार वे जीवों के कल्याणार्थ नाना देशो में नाना जाति में प्रगट होकर भक्तों का रक्षण करते हुये कल्याणमयी लीलाको करते हैं अवतारोमें भी पूर्ण, अंश, कला, आवेश इत्यादि चार भेद होते हैं चौथा अंतर्यामी जो सर्व चेतनाचेतन के भीतर रहकर सवव्यवहार के प्रर्वत्तक हो सब के सत्ता का निर्वाहकर रहते हैं अन्तर्यामी प्रभु भी सदेह निर्देह भेद से दो प्रकार कहे जाते हैं जो अनुरागी प्रेमी भक्त है वे उन्हे सदा रूपवान् समझते हैं और जो रूप रहित निरीह निष्कल सर्वव्यापक मात्र ही मानते हैं उनके हृदय में भगवान् ज्ञानानन्द मात्ररूप से विराजते हैं ।

"इति तत्वत्रयं समाप्तम्"

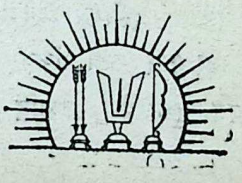

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संसृतिचक्र और तत्परिहारोपाय

ले० नित्यपार्षद जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य रघुवराचार्य जी

क्रमागत अ० ११ टा० ३ से आगे

राज नहीं लिये जा सकते। 'यमयतीति यमः' अर्थात् जो नियमन करे उसे यम कहते हैं। नियमनकर्ता समस्त प्राणियोंका एक परमात्मा ही है। वैवस्वत शब्द भी विवस्वान् (सूर्य) के अपत्य का बोधक यहां नहीं है। किन्तु 'तस्येदम्' इस पाणिनीयसूत्र से, सम्बन्ध में अण् प्रत्यय होने के कारण विवस्वत् (सूर्य) के बिम्बवर्ती परमात्मा का बोधक है। सनत्कुमार संहिता में भी "आदित्य मण्डल मध्यस्थं रामं सीता समन्वितम्". इस वचन से श्रीसीता संयुक्त श्रीराम भगवान् की स्थिति वर्णित की है। इस प्रकार हृदयगुहानिवासी देवके साथ अविवाद होना चाहिये। वह अविवाद है उनके चरणकमलों में अपनेको अर्पण कर देना। समस्त शास्त्रों का इसी अर्थमें शुद्ध तात्पर्य है। महर्षि शौनक भी यही कहते है कि जो 'नियामक स्वरूप से नियाम्यभूत जीव समुदाय के हृदयमें भगवान् है' इस वास्तविक सिद्धान्त को न जानकर अन्यथा ही आत्म स्वरूपको मान बैठा है और उसी प्रकार दूसरेको उपदेश भी करता है। उस आत्मचोर पुरुषने क्या पाप नहीं किया। अर्थात् वह समस्त पापोंका आश्रय बन चुका हैं। इत्यादि अनेक आर्षवचनों से

(शेष टा. २ पर)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सैनिकेषु निवसन् सान्द्रानुबद्धातसीसच्छायः साकेत पृथ्वीपतिः मे हृदि कुतुकम् करोति । ८९॥

यवों के अग्रभाग में शोभमान कणिशों के समूह के समान पिशङ्ग वर्णवाले सुग्रीवके साथ और यथासमय प्रगट हुई कर्णिकार फूल की कलिका के समान गौरवर्ण वाले लक्ष्मणजी के साथ वन्दर सैनिकोंमें निवास करते हुए सान्द्र अनुबद्ध अलसी के समान श्यामवर्ण वाले साकेत को पृथ्वी के स्वामी मेरे हृदय में कुतूहल कर रहे हैं ॥८९॥

संनद्धद्भटकोटिकौणपपुरीसंदर्शने कौतुका
दारूढेन सुवेलशैलशिखरं श्यामाम्बुवाहश्रिया ॥
चापं वासवचापचारुदधता शाखामृगानीकिनी
संबाधान्तिकभूमिना हृतमिव स्वान्तं मम स्वामिना ।९०॥

अन्वयः— संनद्धद्भटकोटिकौणपपुरीसंदर्शने कौतुकात् सुवेलशैलशिखरम् आरूढेन श्यामाम्बुवाहश्रिया वासवचापचारु-चापम् दधता शाखामृगानीकिनो संबाधान्तिकभूमिना स्वामिना मम स्वान्तम् हृतम् इव ॥९०।

संनद्ध यानी तैयार होतेहुए कडोरों सैनिक वाली राक्षसपुरी के यानी लङ्का के देखने के निमित्त कुतूहल से सुवेल पर्वत की चोटी पर चढे हुए श्यामवर्ण मेघ के समान श्यामवर्ण वाले इन्द्रधनुष के समान सुन्दर चापका धारण करते हुए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बन्दरों की सेना के डेरे के नजदीक की भूमि में विराजमान स्वामी श्रीरामजी से मेरा मन हरण किया हुआ सा लगता है। अर्थात् उक्त शोभावाले श्रीरामजीने मेरा मन अपहृत है ॥९०॥

आरूढभ्रुकुटीविटङ्कनिटिलामारक्तनेत्राम्बुजां
गाढोन्नद्धजटाभरां कपिचमूकल्याणदानोन्मुखीम् ।
बाणानुत्सृजतीं रणे निशिचरप्राणापहारक्षमां
लीलां कामपि चिन्तयामि मनसा नीलाम्बुदश्यामलाम् ९१

अन्वयः— आरूढभ्रुकुटीविटङ्कनिटिलाम् आरक्तनेत्राम्बुजाम् गाढोन्नद्धजटाभराम् कपिचमूकल्याणदानोन्मूखीम् रणे बाणान् उत्सृजतीम् निशिचरप्राणापहारक्षमाम् नीलाम्बुदश्यामलाम् काम् अपि लीलाम् मनसा चिन्तयामि ॥९१॥

चढ़ी हुई भ्रुकुटी रूप विटङ्कसे युक्त मस्तकवाली खूब लाल आंख रूप कमलवाली ऊपर दृढ़ता से बंधे हुए जटा जूट वाली बन्दरकी सेना को अपनो कल्याण देनेमें तत्पर युद्धमें शरों को छोडती हुई राक्षसों के प्राणके नाशमें समर्थ काले बादल के समान श्यामवर्णवाली श्रीराम की कोई अनिर्वचनीय लीलाको मन से स्मरण किया करता हूँ ॥९१॥

प्रसर्पदनुपप्लवप्लवगसैनिकप्रेक्षण-
क्षणप्रहृतनैर्ऋतद्रुतगृहीतधूतायुधे ।
रणे पटुरणद्गुणप्रहितबाणबाणासन-
प्रसन्नकरपुष्करे रघुवरे विरूढं मनः॥९२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रसर्पदनुपप्लवप्लवगसैनिक प्रेक्षणक्षण प्रहृतनैर्ऋतद्रुतगृहीतधूता-युधे रणे पटुरणद्गुणप्रहितबाणबाणासनप्रसन्नकरपुष्करे रघुवरे मनः विरूढम् ॥९२॥

चलते हुए उपद्रवरहित वन्दर सैनिकों के देखनेके समय में मार खाये हुए राक्षसों से प्रथम जल्दी से लेते हुए पीछे घुमाए हुए अस्त्र वाले युद्ध में खूब शब्दाय मान डोरी से फेके हुए शरवाले धनुष में खूब सटे हुए हाथ रूप कमल वाले रघुवर श्रीरामजी में मेरा मन विरूढ यानी लगा हुआ है ॥९२॥

बाणच्छिन्नविकीर्णरावणशिरः श्रेणीधुरीणीकृते
घोरे संगरचत्वरे क्रतुभुजां यः प्रीतये तत्वरे ।
तस्या तस्यसितश्रियः श्रितजनश्रेयस्कृतो धन्विनः
स्मारं स्मारमये क्षिपेम समये दुर्वारसर्वापदः ॥९३॥

अन्वयः— यः क्रतुभुजाम् प्रीतये बाणच्छिन्नविकर्णरावण-शिरः श्रेणीधुरीणीकृते घोरे संगरचत्वरे तस्य अतस्यसित-श्रियः श्रितजनश्रेयस्कृतः धन्विनः स्मारं स्मारम् अये समये दुर्वारसर्वापदः क्षिपेम ॥९३॥

जो देवों की प्रसन्नताके लिये पहले शरोंसे कटी हुई पीछे विखरी हुई रावणके मस्तकोंकी पंक्ति में अग्रेसर किये हुए भयानक रणाङ्गण में शीघ्र चल पडे उन अलसी पुष्प

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के सदृश श्यामवर्ण वाले शरणागतजनों के कल्याण करने वाले धनुर्धारी को वार वार याद कर अये! प्रियजन हम समयपर कष्टसे हटाने योग्य सभी आपत्तियोंको दूर फेकेंगे ॥९३॥

नाराचेन समं निशाचरचमूवाराशिकुम्भीभुवा
प्रावृण्मेघ मुहूर्त्तलाञ्छनधनुः प्रख्यं दधानो धनुः।
लङ्कातङ्क निदानवानरभट व्रातानपेक्षान्तिको
वीरः कोऽपि विकर्षतीव हृदयं विष्वक्प्रचारप्रियम् ॥९४॥

अन्वयः— निशाचरचमूवाराशिकुम्भीभुवा नाराचेन समम् प्रावृण्मेघमुहूर्त्तलाञ्छनधनुः प्रख्यम् धनुः दधानः लङ्कातङ्कनिदान वानरभटव्रातानपेक्षान्तिकः कः अपि वीरः विष्वक्प्रचारप्रियम् हृदयम् विकर्षति इव ॥९४॥

राक्षसोंकी सेना रूप समुद्रके विषय में अगस्ति रूप तथा बाणके साथ वर्षाकाल के बादलमें दो घडी चिह्न वाले धनुष के समान धनुषके धारण करनेवाले और लङ्का के आतङ्कके यानी भयके आदिकारण वानर भटों के समूह की अपेक्षा नहीं करनेवाले खूब विचरण शील कोई अनिर्वचनीय वीर मेरे हृदय को अपनी ओर हठात् खैंचते हैं ॥९५॥

सालग्राम इवार्कमण्डल इव क्षीराम्बुराशाविव
श्रीवैकुण्ठ इवागमाञ्चल इव प्राचेतसोक्ताविव।
निर्व्याजेन कृपाभरेण नितरां निधूर्य मोहांहसी
काङ्क्षत्येष ककुत्स्थवंशतिलकः कर्तुं पदं मे हृदि ॥९५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एषः ककुत्स्थवंशतिलकः सालग्रामे इव अर्कमण्डले इव क्षीराम्बुराशौ इव श्रीवैकुण्ठे इव आगमाञ्चले इव प्राचेतसोक्तौ इव मे हृदि निर्व्याजेन कृपाभरेण मोहांहसी नितराम् निर्धूय पदम् कर्तुम् काङ्क्षति ॥९५॥

ये ककुत्स्थमहाराजके कुलमें श्रेष्ठ श्रीरामजी सालग्राम में, सूर्यमण्डलमें, क्षीरसागरमें श्रीवैकुण्डमें आगमाञ्चलमें तथा श्री वाल्मीकिकी उक्ति अर्थात् श्री रामायणमें जैसे अपना नियत स्थान बना रखे हैं वैसे मेरे हृदयमें निष्कपट कृपासमूह से मोह और पापोंको अतिशय दूर कर स्थान बनाने की इच्छा करते हैं ॥९५॥

निहतवति कबन्धं नीरधौ सेतुबन्धं
विहितवति विचित्रं वीक्षकाणां पवित्रम् ।
जगदुपकृतिनिष्ठे ज्याकिणाङ्कप्रकोष्ठे
मम हृदयमुदारे मज्जति क्वापि वीरे ॥ ९६ ॥

कबन्धम् निहतवति नीरधौ वीक्षकाणाम् विचित्रम् पवित्रम् सेतुबन्धम् विहितवति जगदुपकृतिनिष्ठे ज्याकिणाङ्कप्रकोष्ठे उदारे क्व अपि वीरे मम हृदयम् मज्जति ॥९६॥

कबन्धराक्षसको मारनेवाले समुद्रमें देखने योग्य विलक्षण और पवित्र सेतुबन्ध करनेवाले जगत् के उपकार में स्थित धनुष की डोरीके किणसे यानी टेले के चिह्न से युक्त कलाई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाले उदार अति उदार किसी अनिर्वचनीय वीर श्री रामजी में मेरा मन मग्न हो रहा है ॥९६॥

शरस्फुरदुपर्वुधक्वथितजृम्भदम्भोवह-
दूवृहत्तरतरङ्गसंकुलितकूलशैलोदरे ।
उदन्वति वितन्वत स्तुतिमवक्रिमप्रक्रमः
क्रमेत हृदि मे तरण्यभिजनप्रदीपः प्रभुः ॥९७॥

अन्वय :- शरस्फुरदुपर्वुधक्कथित जृम्भदम्भोवः दूवृहत्तर तरङ्गसंकुलित कूलशैलोदरे उदन्वति स्तुतिम् वितन्वति(सति) अवक्रिमप्रक्रमः तरण्यभिजनप्रदीपः प्रभुः मे हृदि क्रमेत ॥९७॥

वाण से विकसित होती आग से उबालित से या ी प्रगट होते हुए मेघ को अतिशय हरण और भक्षण करते हुए तरङ्गों से युक्त तुटवाले पर्वत को पेट में रखने वाले समुद्र के स्तुति करने पर सरल प्रक्रमवाले सूर्य के परिवारों में प्रदीप प्रभु मेरे हृदय में पादार्पण करेंगे ॥९७॥

जगत्त्रयपवित्रया जनितचित्रचारित्रया
महीभवकलत्रया महितभानुमत्पुत्रया ।
दयारुचिरशीलया दमिततादकाबालया
कयाऽपि घननीलया कवचितं मनो लीलया ॥ ९८ ॥

अन्वयः- जगत्त्रयपवित्रया जनित चित्र चारित्रया महीभवकलत्रया महिभानुमत्पुत्रया दयारुचिरशीलया दमिततादकाबालया घननीलया कया अपि लीलया मनः कवचितम् ॥९८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तीन भुवनको पवित्र करने वाली अद्भूतचरित करनेवाली पृथिवीसे उत्पन्न कलत्र यानी स्त्री वाली सूर्य के पुत्रकी वंशकी पूजा करनेवाली दयासे सुन्दर स्वभाव वाली ताडका राक्षसी के सुबाहु नामक पुत्रका दमन करनेवाली बादल के समान श्यामवर्णवाली कोई अनिर्वचनीय लीला ने यानी क्रीडाने मेरा मन कवचित यानी बद्ध कर लिया है ॥९८॥

निरर्गलधनुर्गुणप्रहितनिर्गलन्मार्गण-
प्रपञ्चहतवञ्चनासमरचुञ्चुनक्तञ्चरम् ।
चिरत्नमुनिरत्ननत्युचितयत्नमात्मा मम
स्मरत्ययमनत्ययं प्रभुमदित्यपत्यान्वयम् ॥९९॥

अन्वयः— मम अयम् आत्मा निरर्गलधनुर्गुणप्रहितनिरर्गलन्मार्गण प्रपञ्चहतवञ्चनासमरचुञ्चुनक्तञ्चरम् चिरत्नमुनिरत्ननत्युचितयत्नम् अनत्ययम् अदित्यपत्यान्वयम् प्रभुम् स्मरति ॥९९॥

मेरी यह आत्मा रुकावट रहित धनुष की डोरी (ज्या) से फेके हुए निकलते बाणों के समूह के कपट और युद्ध से प्रख्यात राक्षसोंको मारनेवाले प्राचीन मुनिवरोंके नमस्कारमें योग्यप्रयासवाले विनाशरहित यानी नित्य सूर्य के वंशमें उत्पन्न प्रभु को स्मरण किया करती है ॥९९॥

विभ्रत् प्रत्यवपन्नसर्वभुवनश्चःश्रेयसश्रीपुनः-
प्रत्युत्थापनविभ्रमैकरसिकौ पाण्योर्धनुःसायकौ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थान्यादेशपदाधिरोपितदशग्रीवेदमेकान्तर-
भ्रातृव्यज्जितशक्तिरस्तु हृदि मे वीराग्रणी राघवः ॥१००॥

अन्वयः— पाण्योः प्रत्यवपन्नसर्वभुवनश्वः श्रेयसश्रीपुनः प्रत्युत्थापनविभ्रमैकरसिकौ धनुःसायकौ बिभ्रत् स्थान्यादेशपदाधिरोपितदशग्रीवेदमेकान्तरभ्रातृव्यज्जितशक्तिः वीराग्रणीः राघवः मे हृदि अस्तु ॥१००॥

दोनों हाथों में आपत्तियों से युक्त सब जगह के कल्याण की लक्ष्मी के फिर उठाने में यानी शीघ्रता में प्रधान रक्षक यानी शौकीन धनुष और बाण का धारण करनेवाले रावण को मारकर उसके स्थानमें उसके एकान्तर अर्थात् कुंभकर्ण से छोटे भाई श्रीविभीषणको अपनी आज्ञा से अभिषिक्त कराकर अपनी लोकोत्तर शक्तिको प्रकट करनेवाले वीरों में अग्रेसर श्रीरामजी मेरे हृदय में रहें ॥१००॥

समीकभुवि चण्डया सरणधूतवेतण्डया
भुजाविजितशुण्डया भुजगभीमकोदण्डया ।
प्रतिद्विषमकुण्ठया प्रथमवासवैकुण्ठया
प्रविद्धदशकण्ठया प्रसृतमन्तरुत्कण्ठया ॥१०१॥

अन्वयः— समीकभुवि चण्डया सरणधूतवेतण्डया प्रतिद्विषम् अकुण्ठया प्रथमवासवैकुण्ठया प्रविद्धदशकण्ठया उत्कण्ठया अन्तः प्रसृतम् ॥१०१॥

रण की भूमिमें क्रूर गमनसे उद्दण्डको मारनेवाली शत्रुके प्रति रुकनेवाली नहीं अर्थात् सर्वदा शत्रूपर आक्रमण करनेवाली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा जिनका आदिनिवास स्थान श्री साकेत वैकुण्ठादि हैं ऐसे रावणको मारनेवाली उत्कण्ठाने मेरे अन्तःकरणमें प्रवेश किया है ।१०१॥

प्रभूतगुणभूषणा प्रबलरक्षसां भीषणा
प्रमोदितविभीषणा प्रदरजाऽब्धिसंशोषणा ।
मखाशिषु कृतावना महदमुक्तसंसेवना
महीदुहितृसेवना मनसि भाति मे भावना ॥१०२॥

अन्वयः—प्रभूतगुणभूषणा प्रबल रक्षसाम् भीषणा प्रमोदितविभीषणा प्रदरजा अब्धिशंशोषणा मखाशिषु कृतावना महदमुक्तसंसेवना महीदुहितृसेवना भावना मे मनसि भाति ॥१०२॥

बहुत गुणरूप अलंकारवाली प्रबल राक्षसोंको डरानेवाली विभीषणको खुश कर चुकनेवाली प्रकृष्ट भयसे उत्पन्न हुई समुद्र को सुखानेवाली देवों को रक्षा करनेवाली श्री हनुमदादि नित्य भक्तों से सर्वदा सेवित तथा सर्वेश्वरी महीदुहितृ श्रीसीताजीसे अहर्निश सेविता दिव्य भावना मेरे हृदयमें प्रकाशित हो रही है ॥१०२।

दयारसधुरीणया दमिषु दत्तकल्याणया
दरीसदृशतूणया दलितरावणप्राणया ।
मलीमसविदूरया मनुकुलोदिताकारया
मनः सुकृतधारया मम हृतं महोदारया ॥१०३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्वयः— दयारसधुरीणया दमिषु दत्तकल्याणया दरीसदृशतूणया दलितरावण प्राणया मलीमसविदूरया मनुकुलोदिताकारया महोदारया सुकृतधारया मम मनः हृतम् ॥१०३॥

दया रस में अग्रेसर इन्द्रियदमन करनेवालोमें कल्याण देनेवाली कन्दरों के समान तरकसवाली रावण के प्राण नष्ट करनेवाली पापों से अत्यन्त दूर मनु के वंशमें प्रगट आकार यानी मूर्ति वाली बडी उदार पुण्यों की धारा ने अर्थात् श्रीरामजी की कीर्ति ने मेरा मन हरण किया है ॥१०३॥

कृच्छ्रादन्तः सुरपरिषदः प्राप्य मार्गं प्रविश्य
ब्रह्मर्षीणां गणमथ चलत्कीशसंबाधखिन्नम् ।
राजन्ये मे लगति हृदयं क्वापि पृथ्वीकुमारी-
पीनोतुङ्गस्तनमकरिकालेखविद्याधुरीणे ॥१०४॥

अन्वयः— सुरपरिषदः अन्तर्मार्गम् कृच्छ्रात् प्राप्य अथ ब्रह्मर्षीणाम् चलत्कीशसंबाधखिन्नम् गणम् प्रविश्य पृथ्वीकुमारीपीनोत्तुङ्गस्तनमकरिकालेखविद्याधुरीणे क्व अपि राजन्ये मे हृदयम् लगति ॥१०४॥

देवोंकी सभाके बीच के मार्गको कष्टसे पाकर बादमें ब्रह्मर्षियों को तथा चलते हुए वन्दरों के संबाध से यानी संमर्द से अर्थात् भीड से खिन्न यानी कठीन समूह में प्रवेशकर श्रीसीताजी के स्थूल ऊंचे स्तनों में मकराकृति के लिखनेकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विधामें यानी कलामें अग्रेसर किसी अनिर्वचनीय राजपुत्र में मेरा हृदय लगा करता है ॥१०४॥

निःशब्दस्तिमितप्लवङ्गमभटश्रेण्यन्तरालस्थली-
विक्रान्ताङ्गदहूतदर्शितविमुक्तैकैकदिक्पालकाम् ।
आस्थानीमवलोकितस्मितशिरःकम्पादिसंवाहनां
संतुष्यत्सकलामरां रघुपतेरन्तश्चिरं चिन्तये ॥ १०५ ॥

अन्वयः—रघुपतेः निःशब्दस्तिमितप्लङ्गमभटश्रेण्यन्तरालस्थलीविक्रान्ताङ्गदहूतदर्शितविमुक्तैकैकदिक्पालकाम् अवलोकितस्मितशिरः कम्पादिसंवाहनाम् संतुष्यत्सकलामराम् आस्थानीम् अन्तः चिरम् चिन्तये ॥१०५॥

श्रीरामजी को शब्द रहित निश्चल नीलादि वन्दर सैनिक समूहके बीचमें अतिपराक्रम सम्पन्न अङ्गदादि सेवकों से दिखाए गए विमुक्तजन वाली तथा वन्धन मुक्त प्रत्येक दिक्पालों से युक्त और थोडा सा शिर हाथ हिलाते हुये सेवारत सेवकों से अवलोकित तथा सम्पूर्ण ब्रह्मादि देवों को संतुष्ट करनेवाली अर्थात् अभिलषित सायुज्य मुक्ति प्रदान करने वाली दिव्यस्थली श्री साकेत धामका स्मरण सर्वदा करता हूँ ॥१०५॥

इति जगद्गुरु श्रीआशारामाचार्यशिष्यकविकुलमणि जगद्गुरु श्रीरामभद्राचार्यविरचिते श्रीरामकर्णरसायने जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य रामप्रपन्नाचार्य योगीन्द्रशिष्य पश्चिमाम्नाय विश्रा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मद्वारकास्थ श्रीरामानन्दाचार्यपीठाधीश्वर स्वामी रामेश्वरानन्दाचार्य प्रणीते सान्वय बालबोधिनी हिन्दीटीकार्या द्वितीयोनिष्यन्दः समाप्तः

अज्ञानतो भ्रमवशादिह या त्रुटिः स्यात्
तां मार्जयन् मतिधनः कृपयेति पश्येत् ।
श्रीरामभद्रकविवर्यगभीरवाणी
सिन्धुं तरितुमतिमन्दमतिः क्षमः स्यात् ? ॥

विजयादशमी २०३९
श्रीरामानन्दाचार्यपीठ-श्रीशेषमठ
दि० २७-१०-१९८२ ई०

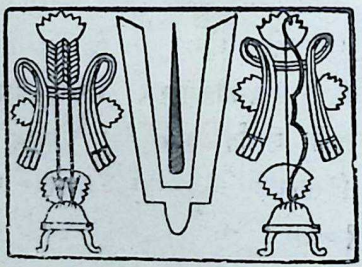

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जगद्गुरु श्रीरामभद्राचार्य जी

अविर्भावः—वैशाखी पूर्णमा संवत् १७३३ वि.

दीरोभावः—माघ पूर्णिमा संवत् १७८९ वि.

जन्मस्थलः—कन्दरा मनिक्कम जि० तंजौर

जीवनपरिचयः—पिताजी का नाम यज्ञराम दीक्षित माता का नाम सुव्वलक्ष्मी । परम वैष्णव श्रीरंगमें भगवान् श्रीरंगजी से पुत्र हेतु प्रार्थना । जन्म । जन्मनाम रामभद्र दीक्षित । जन्मते ही समृद्धि का आगमन । चोक्कनाथ दीक्षितसे व्याकरण तथा नीलकण्ठ दीक्षित से साहित्य का अध्ययन । साहित्य के विद्वान् तिरूपति में भगवान् राम के प्रति समर्पण की भावना । स्वप्न में बाबा हाथी रामजी को गुरु बनाने का आदेश । ज. गु. श्री आशारामाचार्यजी के गृहस्थ शिष्य । कन्दरामनिक्कम में पूर्व साहित्य अध्यापक श्री नीलकण्ठ दीक्षितके पुत्री से विवाह । दम्पती—जीवन सुखमय । दम्पति द्वारा भगवान श्रीरामकी प्रबल आराधना । गृहस्थ दम्पति को प्रभु के स्वप्न दर्शन । मराठा राजा शाहजी द्वारा जागीर प्रदान । जागीर में तिरू वसनल्लूर नामक गाँव की प्राप्ति । भक्ति में विशेष अभिरुचिका उदय पत्नी का देहावसान जागीर भाई को सौंपकर तिरूपतिमें ज. गु. श्री आशारामाचार्यजी की शरणमें । पञ्चसंस्कार सम्पन्न । उर्ध्वपुण्ड्र विभूषित कलेवर । वैष्णवनाम श्री रामभद्राचार्य । दीक्षा के पश्चात् दक्षिण का सम्यक् पर्यटन । उत्तर भारत की उथल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुथल के समय गुरुस्थान में सुन्दर साधु सेवा। रंगस्वामी से विवाद। विवाद में विजय। उत्तर भारत की यात्रा। मिथिला में श्रीभागीरथमिश्र नामक मीमांसक को शास्त्रार्थ में पराजित करना अघोरी वृन्दा के कुत्सित कृत्येां को रोकना। नृसिंहाचलम् में श्री राममहायज्ञ। जीवन के अन्तिम वर्ष पूदकोट्टी नामक रामतीर्थ में। मौन तथा दुग्धाहार।

कृतिः—(१) रामप्रसादस्तव (२) रामचापस्तव (३) रामबाणस्तव (४) रामतूणीरस्तव (५) रामचरित्रस्तव (६) दिव्य रामस्तव पर चन्द्रिका नामक टीका आदि।

ग्रन्थः—जानकीपरिणयनाटक (२) रामकर्णरसायन।

दिशतु स कुशलं जिते दशास्ये
विधिविहितस्तुतिवेदितस्वरूपः।
उपदिशति शिवोनृणां यदीयं
मनुमविमुक्तपुरे विमुक्तिहेतोः॥
देहावसानसमये दयया रघुणां
वीरः कराम्बुजविराजदभीतिमुद्रः।
आरुहच पुष्पकमलकृत वामभीगो
देव्या विदेहसुतया मम सन्निधत्ताम्॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् (ऋग्वेद म. ७ सू. ५९ म. १२ अ. ५ अ. ४)

त्र्यम्बकम्–त्रयाणाम्–ब्रह्म–विष्णु–रुद्राणाम्, अम्बकम्–पितरम् अर्थात् त्रि, ब्रह्मा विष्णु रुद्र तीनों देवताओं के अम्बकं पितरं–पिताकी

यजामहे–पूजा या उपासना करते हैं । इति शिष्य समाहितो वशिष्ठो ब्रवीति–ऐसा शिष्य समाहित वशिष्ठ ऋषि कहते है । किं विशिष्टमित्यत आह :—कैसे–त्र्यम्बक की ? इसके जवाब में कहते हैं

सुगन्धिम्–प्रसारित पुण्य कीर्तिम्–जिन्होंने पुण्य कीर्ति को फैलाया है (ऐसे) पुनः किं विशिष्टम् फिर कैसे ?

पुष्टिवर्धनम्–जगद्बीजम्–उरुशक्तिमित्यर्थः । उपासकस्यवर्धनम्, अणिमादिशक्तिवर्धनम् अर्थात् संसार के वीज अतिशय शक्ति वाले–या उपासना करने वाले की वृद्धि करनेवाले या अणिमादि शक्ति या ऐश्वर्य की वृद्धि करने वाले । अतस्त्वत्प्रसादादेव–अत आपकी अनुकम्पा से ही

मृत्योः– मरणात्–संसारात्, जन्म मृत्यु रूप संसार से

मा–मां, मुझ उपासक को

मुक्षीय–मोचय, छुडाओ (बन्धनमुक्तकरो) कैसे ? (यथा)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बन्धनात्–वृन्तात्, बन्धन से :–यानी बन्धन रूप वेलसे **उर्वारुकम्** इव–कर्कटीफलम्–इव तद्वन्मरणात्संसाराद्वा मोचय अर्थात ककडीके फल के समान संसार से या मृत्यु से छुडाओ **किं** मर्यादीकृत्य–कवतक या कहां तक छुडावें ?

आमृतात्–सायुज्यतामोक्षपर्यन्तम् इत्यर्थः यानी अमरण धर्म रूप सायज्य मुक्ति पर्यन्त अर्थात् पुनः संसार में जन्म न लेना पडे ऐसी सायुज्यमुक्ति हमें प्रदान करें (सायणभाष्यम्)

तात्पर्य यह कि मैं दिगन्त व्यापि कीर्ति वाले तथा संसार के बीज अतिशय शक्ति से युक्त, उपासक के अणिमादि शक्ति या ऐश्वर्य को बढाने वाले तथा ब्रह्मा विष्णु रुद्र के पिता अर्थात् तीनों देवों को उत्पन्न करने वाले परम प्रभु "परान्नारायणाच्चैव कृष्णात्परतरात्तथा । यो वै परतमः श्रीमान् रामोदाशरथिस्वाट्" इत्यादि आगम वचनों से सर्वेश्वरत्वेन प्रतिपादित श्रीरामजी की उपासना करता हूँ । जो मुझको जन्म मरण रूप बन्धन से छुडाने वाली सायुज्य मुक्ति प्रदान कर ककड़ी फल जैसे पक जाने पर अनायास वेल से छूट जाते हैं वैसे ही मृत्यु रूप बन्धन से मुझको स्वभावतः छुड़वा दें ।

समाप्त

— * —

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्वेश्वर श्रीसीतारामाभ्यां नमः

श्रीरामरावलाचार्योपनामक

जगद्गुरु विजयरामाचार्य निर्मितः

श्री राममहिम्नस्तवः

नत्वाऽहं भाष्यकृद् रामानन्दं रामं गुरुं तथा।
श्रीरामप्रीतये कुर्वे श्रीराममहिमस्तवम् ॥ १ ॥

पश्चिमाम्नाय श्रीरामानन्दाचार्यपीठाधीश्वर

स्वामी रामेश्वरानन्दाचार्य

प्रणीतः

संस्कृत हिन्दी प्रकाश

सहितः

सीताकान्त समारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम्।
रामप्रपन्न गुर्वन्तां वन्दे गुरु परंपराम् ॥१॥

आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य तथा सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी तथा स्वगुरु जगद्गुरु श्रीअल्हदेवाचार्यजी को सादर दण्डवत् प्रणाम कर श्रीरामचन्द्रजी की प्रीति प्राप्त्यर्थ श्रीराम-महिम्नस्तव को मैं श्रीविजयरामाचार्य बनाता हूँ ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महामोहावर्ते पतितमिह मां ते शरणगं
शरण्यस्त्वत्तोऽन्यः प्रभवति न कोऽप्यत्र जगति ।
अतस्त्वत्पादाम्भो रुहयुगलमाश्रित्य नितरा-
मितीहे संसाराद् वृजिननिचयादुद्धर विभो ?॥ २ ॥

अन्वय-विभो ! इह महामोहावर्ते पतितम् ते शरणगम् माम् संसारात् वृजिननिचयात् उद्धर, त्वत्तः अन्यः शरण्यः अत्र जगत्ति कः अपि न प्रभवति, अतः त्वत्पादाम्भोरुहयुगलम् आश्रित्य इति नितराम् ईहे ॥ २ ॥

हे विभो ! व्यापक ! सर्वेश्वर श्रीराम ! इह-अस्मिन् महामोहाऽऽवर्ते-महति-महति मोहरूपे आवर्ते-जलभ्रमे पतितम् स्वप्राक्तनकर्माधीनत्वेन गतम् ते-भवतः शरणगम्-शरणप्रपन्नम् माम्-विजयरामाचार्यम् संसारात्-जन्ममरणात्मकभवात् वृजिननिचयात्-पापसमूहात उद्धर-निष्काशय यतः त्वत्तः-भवतः अन्यः-इतरः-शरणेसाधुः, "सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते । अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम" इति सर्वेश्वर श्रीरामोक्तेः संसारेऽन्यशरणागतवत्सलो नास्ति तस्मात्त्वामेव प्रपन्नेति भावः । अत्र-अस्मिन् जगति-लोके कोऽपि-कश्चित् न-नैव प्रभवति-उद्धर्तुं शक्नोति, अतः-अस्मात् कारणात् त्वत्पादाम्भोरुहयुगलम्-भवच्चरणकमलयुग्मम् आश्रित्य-अवलम्ब्य, इति-इदम्, नितराम्-अत्यन्तम् ईहे-अभ्यर्थये त्वच्छरणागतिं विहाय संसारतरणोपायाभावात् संसारसंतरणाय भूयो भूयो भवन्तमेव संप्रार्थयेति भावः ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे विभो सर्वव्यापक श्रीरामजी ! इस बडे मोह रूप जल भ्रमण में पडे आपके शरणमें आये मुझे (विजयरामाचार्य को) संसारसे और पापके समूह से उगारिये, कारण कि आप से अतिरिक्त संसारमें मेरा शरण्य इस जगत्में कोई नहीं तथा उद्धार करने में समर्थ भी कोई नहीं है, इस कारणसे आप के चरणकमलयुगलों का आश्रय कर यह याचना आप से करता हूँ कि मुझे इस अपार संसार से बचावें अर्थात् मेरा रक्षण करें ॥२॥

निजाव्यक्तेनेदं जगदखिलमिच्छादिकरणैः
समुत्पन्नं कृत्वा ऽवसि तु सततं श्रीरघुपतेः ?।
युगान्ते सर्वं वै हरसि किल रौद्रेण वपुषा
त्वमेकः सर्वात्मन्, विहरसि न चान्यो गुणनिधे ?॥३॥

अन्वय :—सर्वात्मन् गुणनिधे ! श्रीरघुपते ! निजाव्यक्तेन इदम् अखिलम् जगत् इच्छादिकरणैः समुत्पन्नम् कृत्वा सततम् अवसि, तु युगान्ते रौद्रेणवपुषा सर्वम् वै हरसि किल त्वम् एकः विहरसि न च अन्यः अस्ति ॥ ३ ॥

हे सर्वात्मन् ! – चराचरजगत्कलेवर ! गुणनिधे ! – दिव्यगुणशेवधे ! श्रीरघुपते !–श्रीरघुकुलश्रेष्ठ ! निजाव्यक्तेन–स्वकीयप्रकृत्या इदम्–प्रत्यक्षं दृश्यमानम्, अखिलम्–सर्वम् जगत् भुवनम्, इच्छादिकरणैः "एकोऽहंबहुस्याम" इत्यादि वाञ्छाप्रभृतिकरणैः समुत्पन्नम्–संसृष्टं कृत्वा–विधाय "यो ब्रह्माणं विद-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घाति पूर्वं यो नै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै" इति श्रुतेः "यो ब्रह्माणं-विदधाति' इत्येतच्छ्रुति मानतः। रामोविधिं विधायादौ तस्मै वेदं हि दत्तवान्" (श्रीबोधायनमतादर्शः) इति स्मृत्युक्तेश्च सततम्-अनारतम् अवसि-रक्षसि तु-पुनः युगान्ते-युगावसाने रौद्रेण-रुद्रसम्बन्धिना वा घोरेण वपुषा शरीरेण सर्वम्-निःशेषम् नै-निश्चयेन हरसि संहरसि विनाशयसीत्यर्थः, किल-खलु, त्वम्-श्रीरामः एव एकः-अद्वितीयत्वेन विहरसि-सर्वस्मिन् विचरसि, न च-नहि अन्यः त्वदतिरिक्त कर्मत्रितयसंपादकोस्तीति भावः ॥३॥

हे चराचर जगत्कलेवर ! दिव्यगुणों के खजाने ! श्रीरघुनाथजी ! आप अपनी प्रकृतिसे इस सब जगत्की इच्छादिकरणों की रचनाकर उसको सदा रक्षा करते हैं, फिर युगों के अन्तमें रौद्र शरीरसे जगत् का संहार करते हैं, अतः निश्चय ही आप अद्वितीय सर्वशक्ति सम्पन्न ईश्वर हैं दूसरा कोई नहीं हैं ॥ ३ ॥

रमन्ते योगीन्द्रा स्त्रिपुरहरमुख्या स्त्वयि सदा
समाधौ विश्वात्मन्! नियमतहृषीका रघुपते?।
तथाऽप्येते पारं निखिलनिगमागोचर! विभो!
महिम्नस्ते नूनं गमयितुमलं नैव कुशलाः ॥ ४॥

अन्वय :-विश्वात्मन् निखिलनिगमागोचर ! विभो ! रघुपते ! त्रिपुरहरमुख्याः योगीन्द्राः नियमतहृषीकाः त्वयि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाधौ रमन्ते, तथा अपि एते ते महिम्नः पारम् गमयितुम् कुशलाः नैव नूनम् ॥ ४ ॥

हे विश्वात्मन् !–विश्वम्-सर्वम् चराचरात्मकम् जगत् आत्माशरीरम् विद्यते यस्य स विश्वात्मा, तत्संबुद्धौ तथा, "जगत्सर्वं शरीरम् ते स्थैर्यं ते वसुधातलम्" इति महर्षि वचनात् स्थावरजङ्गमात्मकजगच्छरीर ! निखिलनिगमागोचर !–निखलानां सर्वेषां निगमानां–वेदानाम् अगोचर !–अविषय ! "यतो वाचो निवर्तन्तेऽप्राप्य मनसा सह" "नेति नेत" इति श्रुतेः वाक्पथातीतत्वात् विभो !–व्यापक ! रघुपते !–श्रीरघुनाथ ! त्रिपु हरमुख्याः शिवप्रभृतयः योगीन्द्राः–योगिवर्याः नियमितहृषीकाः-निरुद्धविषयेन्द्रियाः त्वयि–सच्चिदानन्दात्मके भवति श्रीरामे भवद्विषयके समाधौ–प्राणिधाने रमन्ते क्रीडन्ति 'रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि" इति श्रुत्युक्तेः यद्यपि तथाऽपि एते–इमे ते तव भवतः श्रीरामब्रह्मणः पारम्–तीरम् अन्तं गमयितुम्–गन्तुम् अलम्–सम्यक् कुशलाः समर्थाः नैव–नहि नूनम्–खलु भवन्तीति शेषः तदा स्वल्पधीधनोऽहं कथं तव महिम्नः पार गन्तुमीशो भविष्यामीति भाव ॥ ४ ॥

हे सर्वस्वरूप ! सब वेदों के भी अविषय ! शब्दातीत ! विभो ! व्यापक ! श्रीरघुवर ? शिवादियोगिवर्य विषयेन्द्रियोंको रोकनेवाले आप के विषय में समाधिमें यद्यपि रमते हैं तो भी परब्रह्म आपका पार अच्छा तरह से पाने में समर्थ नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होते हैं । तो स्वल्प बुद्धिवाला मैं आप की महिमा का पार कैसे पाऊंगा ? ॥ ४ ॥

कदाचिद् भौमान् वै गणयति कणान् कोऽपि मतिमां
स्तथा पारावारोदकलवचयान् वै रघुपते ? ।
क्वचिन्नक्षत्रौघं वियति गणनायां नयति वै
गुणानां ते पारं गमयितुमलं नैव कुशलाः ॥ ५ ॥

अन्वय :–रघुपते ! कः अपि मतिमान् भौमान् कणान् कदाचित् वै गणयति, तथा पारावारोदकलवचयान् वै (गणयति) क्वचित् वियति नक्षत्रौघम् गणनायाम् वै नयति, परन्तु ते गुणानाम् पारम् गमयितुम् अलम् कुशलाः न एव ॥ ५ ॥

हे रघुपते !–श्रीरघुनाथ ! कोऽपि–कश्चित् मतिमान्–बुद्धिमान् भौमान्–पार्थिवान् कणान्–अंशान् कदाचित्–कस्मिंश्चित् काले वै–निश्चयेन गणयति, तथा–तेन प्रकारेण पारावारोदकलवचयान्–समुद्रजलकणसमूहान् वै–निश्चयेन गणयति, क्वचित् कश्चित्कुत्रापि वियति–आकाशे नक्षत्रौघम्–तारासमूहम् गणनायाम्–संख्याने वै–खलु नयति–प्राप्नयति समर्थो भवति किन्तु ते भवतः गुणानाम् अनन्तदिव्यगुणानाम् पारम्–तटम् अन्तमित्यर्थः गमयितुम्–नेतुम् समस्तगुणावबोद्धुमित्यर्थः । अलम् सम्यक् कुशलाः समर्थाः नैव न खलु भवन्तीति । "यो वा अनन्तस्य गुणान्ननन्तानुक्रमिष्यन् स तु बालबुद्धिः । भौमान् कणान् वै गणयेत्कथञ्चित् कालेन नैवाखिलशक्तिधाम्नः" इति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महर्षिव्यासोक्तेः श्रीरामानन्तगुणगणगणनाशक्यत्वं व्यज्यतेऽतो मादृशानां कथं तद्भवेदिति भावः ॥ ५ ॥

हे अनन्त जीवोंके नाथ श्रीरामजो ? कोई विशिष्ट बुद्धिवाला व्यक्ति भूमिकणों को कथंचित् गणना कर ले या समुद्र कणोंको भी गिन डाले अथवा आकाशमें स्थित अनन्त नक्षत्र समूहों को भी गिनले परन्तु आपके अनन्तानन्त दिव्य गुण समूहों को गिनकर अन्त नहीं पा सकता है तो मेरे जैसा सामान्य बुद्धिवाला आपके दिव्य अनन्त महिमाका वर्णन कैसे कर सकता है ? ॥ ५ ॥

कृतं सत्यं भूमन्? सगुणमगुणं रूपमुभयं
चिदानन्दं तद्वै निखिलनिगमैरप्यविदितम् ।
समष्टिर्व्यष्टिस्ते विलसति विराड् रूपमपरं
तदेतद् वै किञ्चित् स्फुरति हृदये चैव विदुषाम् ॥६॥

अन्वयः—सगुणम् अगुणम् उभयम् रूपम् सत्यम् कृतम् तत् चिदानन्दम् निखिलनिगमैः अपि अविदितम् समष्टिः व्यष्टिः ते अपरम् विराड् रूपम् तत् एतत् किञ्चित् विदुषाम् एव हृदये स्फुरति च ॥६॥

हे भूमन् !—बहोर्भावो भूमा तत्संबुद्धौ भूमन् 'बहु शब्दाद् भावे इमनिच् प्रत्ययेऽनुबन्धलोपे 'बहोर्लोपो भूचबहोः' इति सूत्रोक्तेन इकारस्य लोपे बहोर्भू रूपादेशे तद्धितान्तत्वेन प्रातिपदिकत्वे सौ तस्य हल्ङ्यादिलोपे नलोपस्य नडिसंबुद्ध्यो इति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निषेधे रूपं सिद्ध्यति । बहुत्वेति तदथः सम्भवति परन्तु बहुत्वाश्रयेत्यर्थोऽत्र संगच्छते "राम एव परंब्रह्म राम एव परं तपः । राम एव परं तत्वं श्रीरामो ब्रह्म तारकम्"

"सर्वस्याधाभूतौ च त्वावामेवहि मारुते ।
स्वेमहिम्नि स्थितावावामन्य धाो न चावयोः"

इत्याद्यागमोक्तेः । हे बहुत्वाश्रय ! 'भूमा वै सुखं नाल्पे सुखमस्तीत्यादि श्रुत्यनुरोधात्सर्वव्य पक परब्रह्मेत्यादिकमनुमन्धेयम् सगुणम् गुणसहितम् विशिष्टगुणयुतं अगुणम् गुणरहितम् हेयगुणहीनम् इत्युभयम् द्विविधम् रूपम् आकारः सत्यम् तथ्यम् कृतम् विहितम् तत् रूपम् चिदानन्दम् प्रकाशसुखमयम् निखिलनिगमैः -सकलवेदैः अपि अपिना पुराणेतिहासादिभिः अपि अविदितम्—अज्ञातम , समष्टिः सर्वेषां पदार्थानां समूहः व्यष्टिः—एकैकपदार्थः ते—भवतः अपरम्—अन्यत्, विराड्रूपम्—आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तरूपम् तत्-रूपम् एतत् इदम्, वै—खलु किञ्चित्—किमपि विदुषाम्—सभक्तिकज्ञानवनाम् एव निश्चयेन, हृदये चित्ते स्फुरति विकसति, चकारात् 'मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये" "यमेवैस वृणुते तेन लभ्य स्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुंस्वाम्" इति श्रुत्यनुरोधात् त्वच्चरणापन्नानुमन्धेय स्त्वं न तु त्वत्पादशरण बहिर्मुखानुगम्यस्त्वमसीति चकारादवगम्यते "रामो ब्रह्म परात्परं श्रुतिमतं भक्त्यैव निःश्रेयसम्" इत्याद्याचार्योक्तेः ॥६।

हे भूमन् बहुत्वाश्रय ! सर्व व्यापक श्रीराम सगुण और हेयगुण रहित यह उभय रूप आपने सच्चा ही किया है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्योंकि आपका वह रूप चिदानन्द प्रकाश तथा सुखमय आपका दिव्य स्वरूप है जो सब वेदों से और पुराणादियों से भी अज्ञात है, श्री समष्टि सब पदार्थों का समूह तथा व्यष्टि पदार्थों का प्रत्येक रूप आपका दूसरा विराट रूप है यह आपके शरणागत कुछ विद्वानों के ही हृदयमें प्रकाशित होता है आपसे बहिर्मुख जनोंके अन्तःकरण में नहीं । ६॥

विरिञ्चीशेन्द्राद्यैरमरनिवहैः सिद्धमुनभिः
स्तुतस्त्वं भूभारव्यसनमपहर्तुं सुरपते ? ।
विभुः कौसल्यायां दशरथनृपात्स्वाकृतियुतः
समुद्भुतोऽकार्षीं निजपदकृतार्थां वसुमतीम् ॥ ७ ॥

अन्वय—सुरपते ! विभुः त्वम् विरिञ्चीशेन्द्राद्यैः अमर निवहैः सिद्धमुनभिः भुभारव्यसनम् अपहर्तुम् स्तुतः दशरथ नृपात् कौसल्यायाम् स्वाकृतियुतः समुद्भुतः वसुमतीम् निजपद-कृतार्थाम् अकार्षीः ॥७॥

हे सुरपते ! हे देवनाथ ! विभुः व्यापकः, त्वम् श्रीरामः विरिञ्चीशेन्द्राद्यैः ब्रह्मशिवशक्रप्रभृतिभिः, अमरनिवहैः देवगणैः तथा सिद्धमुनिभिः सिद्धैः देवयोनिविशेषैः मुनिभिः वेदशास्त्रा-र्थतत्त्वावगन्तृभिः, विरिञ्चीशेन्द्राद्यैरित्यत्र सिद्धमुनिभिरित्यत्र च द्वन्द्वे पूर्वनिपात र्हस्य परनिपातोऽपि 'स सौष्ठवादार्यविशेष-शालिनी' इति भारविप्रयोगदर्शनाद् भवति । अतः ईशेन्द्रयो 'अजाद्यदन्तम्' (२ २।३२) इति पाणिनिसूत्रेण प्राप्तस्य पूर्वप्रयोग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्य परप्रयोगः 'एवं द्वन्द्वेधि (२।२।२३) इतिपाणिनिसूत्रेण मुनिशब्दस्य प्राप्तस्य पूर्वप्रयोगस्य परप्रयोगो भवति पूर्वनिपातार्हस्य शब्दस्यानित्यत्वेन परप्रयोगात् । भूभाराव्यसनम् पृथिवीभारदुःखत्वम्, अपहर्तुम् दूरीकर्तुम् स्तुतः नुतः सन् दशरथनृपात् तन्नामावधसार्वभौमाम् कौशल्यायाम् तदाख्यदशरथमहिष्याम् स्वाकृतियितुः स्वस्य आत्मनः अकृत्या सच्चिदानन्दस्वरूपेण युतः समलङ्कृतः "परमात्मानरा कृतिः" इत्यागमोक्तेः समुद्भुतः स्वरूपेणावतीर्णः वसुमतीम् पृथिवीम्, निजपदकृतार्थाम् स्वचरणारोपणेन कृतकृत्याम् अकार्षीः व्यधाः स्वप्रतिज्ञानुसारेण स्वरूपावतारेण भूभारंसमुधृत्य सर्वजनकृतार्थंव्यकार्षीः इतिभावः ॥७॥

हे देवनायक ! व्यापक श्रीरामजी आपने ब्रह्मा शिव इन्द्र आदि देवगणोंसे और सिद्ध मुनियोंसे पृथ्वीके भार और दुःख के नाश करने के लिये स्तुत होकर श्रीदशरथ राजासे श्री कौशल्या महारानी में अपने सच्चिदानन्द स्वरूपसे युक्त अवतीर्ण होकर पृथिवी को अपने चरणोंसे कृतार्थ कर अपने शरणापन्नजनों को भी कृतार्थ किया ॥७॥

मुने विश्वामित्राच्छरणद ! बलां चाप्यतिबलां
महाविद्यां प्राप्य प्रणतजनसौभाग्यद ? विभो ? ।
शरेणैकेन त्वं निशिचरवधूं चातिमतीं
महाघोरां हत्वा विपिनमभयं चैव कृतवान् ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्वयः—शरणद ! प्रणतजनसौभाग्यद ! विभो ! त्वम् विश्वामित्रात् मुनेः बलाम् च अपि अतिबलाम् च महाविद्याम् प्राप्य एकेन शरेण अतिमहतीम् महाघोराम् निशिचरवधूम् हत्वा विपिनम् अभयम् एव कृतवान् ॥८॥

हे शरणद ! -हे सर्वजनशरणदायक ! प्रणतजनसौभाग्यद ! प्रणतानाम् जनानाम् लोकानाम् सौभाग्यद ! समीचीनभाग्यदातृः सायुज्यमुक्तिद तेत्यर्थः । विभो ! सर्वव्यापकश्रीराम ! त्वम्—भवान् श्रीरामः, विश्वामित्रात् विश्वामित्रनाम्नः मुनेः—ऋषेः बलाम्-एतन्नाम्नीम् च पुनः अपि अतिबलाम् एतन्नाम्नीम्, महाविद्याम्—महतीं विद्याम्, प्राप्य—लब्ध्वा, एकेन-अद्वितीयेन, शरेण-बाणेन अतिमहतीम्—अत्यन्तविशालाम् , महाघोराम्—बहुभयानकाम् निशिचरवधूम्—राक्षसीम् (ताडकाख्याम् सुकेतुपुत्रीम्) हत्वा—मारयित्वा, विपिनम्—वनम् निश्रयेन, अभयम् भीतिरहितम् कृतवान् विहितवान् असि । अतस्त्वं सर्वाभयदाता शरण्यश्चेति ॥८॥

हे सर्वजनों को शरण देनेवाले श्रीराम आपके चरणारविन्द में प्रणाम करनेवाले जनों को सौभाग्य सायुज्य मुक्ति देने वाले, व्यापक प्रभु आप श्रीरामजीने विश्वामित्र ऋषिसे बला और अतिबला महाविद्या प्राप्त कर एक ही बाण से बहुत बडी सर्वजन भयदायक बहुत भयानक ताडका राक्षसीको मारकर वन तथा वनवासियों को भय रहित किया ॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करालास्यं घोरं निशिचरयुगं कौणपवरं
श्रुतीनां द्वेष्टारं मुनिमखनिघाते च निरतम् ।
सुबाहुं मारीचं निशित विशिखेनोरसि दृढं
निहत्यैकैकेनाहुतमिह जुगोपाऽऽकृतधियाम् ॥ ९ ॥

अन्वयः— करालास्यम् घोरम् निशिचरयुगम् कौणपवरम् श्रुतीनाम् द्वेष्टारम् मुनिमखनिघाते च निरतम् सुबाहुम् मारीचम् च एकैकेन निशितविशिखेन उरसि दृढम् निहत्य इह आकृतधियाम् आहुतम् जुगोप ।९॥

करालास्यम् भयानकमुखम् घोरम् भीमम् निशिचरयुगम् राक्षसद्वयम् श्रुतीनाम् वेदानाम् द्वेष्टारम् द्वेषकारकम् मुनिमखनिघाते मुनियज्ञनाशे च निरतम् तत्परम् सुबाहुम् सुबाहुनामानम् मारीचम् मारीचनामधेयम् एकैकेन एकैनैकेन च, निशितविशिखेन तीक्ष्ण शरेण, उरसि वक्षसि, दृढम् गाढम् निहत्य मारयित्वा, इह पृथिव्याम् सिद्धाश्रमे वा आकृतधियाम् समन्ताद् बुद्धिमताम् मुनीनाम् आहुतम् यज्ञम् जुगोप ररक्ष स्वजनधर्मरक्षा स्वप्रतिज्ञापालनव्याजेन यज्ञो वै विष्णु इत्युक्त्या त्वदीयाराधनभूतक्रियाकलापादिकान् रक्षितवानसीत्यर्थ ॥९॥

भयानकमुखवाले भयङ्कर दो राक्षसों को वेद के द्वेषी और मुनियोंके यज्ञके नाश करनेमें तत्पर सुबाहु और मारीच को एक एक तीखे बाणसे छातीमें दृढ प्रहारसे मारकर खूब मतिमान् मुनियों के सर्वाराधनभूत उस यज्ञको आपने उस तपोवन में रक्षा की ॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिलाभूतां शापाच्चरणरजसा गौतमवधूं
यथापूर्वां कृत्वा परमसुभगां चातिविमलाम् ।
महोत्तुङ्गं चापं सपदि शितिकण्ठस्य सुदृढं
द्विधा खण्डं चक्रे जनकनगरीं प्राप्य मुनिना ॥१०॥

अन्वयः—शापात् शिलाभूताम् गौतमवधूम् चरणरजसा परमसुभगाम् अतिविमलाम् यथापूर्वाम् च कृत्वा मुनिना जनकनगरीम् प्राप्य शितिकण्ठस्य महोत्तुङ्गम् सुदृढम् चापम् सपदि द्विधा खण्डम् चक्रे ॥१०॥

शापात् गौतमस्याक्रोशात्, शिलाभूताम् पाषाणत्वमाप्ताम् गौतमवधूम् गौतमस्य मुनेरहल्याख्यपत्नीम्, स्व श्रीचरणरजस्पर्श मात्रेण परमसुभगाम् अत्यन्तसुन्दरीम् अतिविमलाम् अत्यन्तविशुद्धाम् पूर्ववत्स्वरूपाम् च कृत्वा विधाय, मुनिना विश्वामित्रेण ऋषिणा सहजनकनगरीम् जनकपुरीम् प्राप्य समासाद्य, शितिकण्ठस्य शिवस्य, मेहोत्तुङ्गम् बहूच्चम्, सुदृढम् अत्यन्तगाढम् चापम् धनुः, सपदि तत्क्षणे, द्विधा द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम् खण्डम् शकलम्, चक्रे विदधे ॥१०॥

आपने गौतममुनिके शापसे पत्थर हुई अहल्या नाम की गौतम स्त्री को श्रीचरणरज के स्पर्श मात्रसे अत्यन्त सुन्दरी अत्यन्त विशुद्ध पहले की समान रूपवती कर विश्वामित्र ऋषिके साथ जनकपुर में जाकर शिवजीका अत्यन्त ऊंचा अत्यन्तदृढ धनुष को तुरत दो खण्डों में विभक्त किया यानी अनायास ही तोड़कर दो टुकडे कर दिये ॥१०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शरद्राकेशास्यां विमलकलधौताङ्गरुचिरां
स्फुरद्रत्नाकल्पां जनकतनयां विश्वजननीम् ।
शुभाहे यद्रामो विधिवदुपयेमे सुललितां
महेन्द्रादिश्रेष्ठामरमुकुटनीराजितपदाम् ॥ ११ ॥

अन्वयः-यद्रामः शरद्राकेशास्याम् विमलकलधौताङ्गरुचिराम् स्फुरद्रत्नाकल्पाम् विश्वजननीम् सुललिताम् महेन्द्रादिश्रेष्ठामरमुकुटनीराजीतपदाम् जनकतनयाम् शुभाहे विधिवत् उपयेमे ॥११॥

यद्रामः यश्चासौरामः सर्वलोकप्रसिद्धसर्वेश्वरश्रीरामः शरद्राकेशास्याम् शरच्चन्द्रमुखीनीम्, विमलकलधौताङ्गरुचिराम् विशुद्धसुवर्णसदृशावयवमञ्जुलाम्, स्फुरद्रत्नाकल्पाम् शोभमानमणिभूषणाम्, विश्वजननीम् जगन्मातरम् "सर्वेश्वरी यथा चाहं रामः सर्वेश्वरस्तथा" "शून्या हि निग्रहेणाथा निग्रहाब्धिः सुवत्सला। जननी सर्वलोकानां श्रीसीता शरणं मम" "भर्त्री च जगतः कर्त्री हर्त्री जनकनन्दिनी । जगद्धत्री जगद्योनिः श्रीसीता शरणं मम" (वशिष्ठसंहिता १३-७-१०) इत्याद्यागमोक्तेः सुललिताम् अत्यन्त सुन्दरीम् लोकोत्तररूपवतीम् महेन्द्रादिश्रेष्ठामरमुकुटनीराजीतपदाम् महेन्द्रप्रभृतिवरसुरमुकुटस्थमणिप्रभाभिः सम्यक्प्रकाशितचरणाम्, जनकतनयाम्, श्रीजानकीम्, शुभाहे मङ्गलकरदिवसे मार्गशीर्षशुक्लपञ्चम्यामितियावत् विधितत् वेदशास्त्रीयविधानपुरस्सरम्, उपयेमे व्युवाह श्रीसीतापाणिग्रहणं कृतवानित्यर्थः (अभवत्)॥११॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिस सर्वलोक प्रसिद्ध श्रीरामजी ने शरदऋतुके निर्मलचन्द्र के समानमुखवाली विशुद्ध सोनेके समान अंगोंसे शोभित, शोभते हुए मणियों के अलङ्कारवाली जगन्माता अत्यन्त सुन्दरी महेन्द्र आदि बडे देवों के मुकुटमें जडे हुए मणियोंके प्रकाश से अच्छी तरहसे प्रकाशित चरण वाली श्री जानकीजीके साथ शुभ दिनमें मार्गशीर्ष शुक्ल पञ्चमी के दिन वेदशास्त्र के विधान के अनुसार विवाह किया ॥११॥

महाघोरं त्रुटयत्त्रिपुरहरचापस्य निनदं
समाकर्ण्य क्रोधं भृगुकुलपतेः क्षत्रियरिपोः ।
पथि प्राप्तस्यास्य स्वयमपि जहर्थ त्वमतुलं
महावीर! प्रद्योतनकुलमणे! पाहि नितराम् ॥ १२ ॥

अन्वयः त्रुटयत्त्रिपुरहरचापस्य महाघोरम् निनदम् समाकर्ण्य पथि प्राप्तस्य क्षत्रियरिपोः अस्य भृगुकुलपतेः अतुलम् क्रोधम् अपि त्वम् स्वयम् जहर्थ महावीरः! प्रद्योतन कुलमणे! नितराम् पाहि ॥१२॥

त्रुट्यत्त्रिपुरहरचापस्य– भज्यमानशिवधनुषः, महाघोरम् अत्यन्तभयानकम् निनदम् शब्दम्, समाकर्ण्य श्रुत्वा समागते पथिमार्गे प्राप्तस्य सङ्गतस्य, क्षत्रियरिपोः–राजन्यशत्रो अस्य एतस्य प्रसिद्धस्य भृगुकुलपतेः भृगुवंशनायकस्य परशुरामस्य अतुलम् अनुपमम् क्रोधम् रोषमपि त्वम् सर्वेश्वरश्रीराम एव स्वयमात्मनैव जहर्थ हरीतकर्थं एतादृशमहाक्रोधमपि सर्वदमन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कारण हे महावीर ? लोकोत्तरचमत्कारशीलमहाशूरप्रभो ? हे प्रद्योतनकुलमणे ? सूर्यवंशरत्नभूतश्रीराम ? त्वच्छरणागतजनान् नितराम् सर्वाभयप्रदत्वेन सम्यक् पाहि सर्वाभयदातृत्व प्रतिज्ञा संस्मरन् सर्वापद्भ्यो जनीमृत्युभ्यो रक्षेति साग्रह प्रार्थना सर्वाभयप्रदातृत्वस्यान्यत्राभावात् ॥१२॥

टूटते हुए शिवधनुष का अत्यन्त भयानक शब्द सुनकर कुपित हो रास्ते में मिले हुए क्षत्रियेां के शत्रु उन श्रीपरशुरामजी का अनुपम क्रोध को भी आपने स्वयं हरण कर लिया ऐसे अनुपम शक्तिशाली हे महावीर श्रीरामजी ? हे सूर्यवंश में श्रेष्ठ प्रभु ? आप के शरण में आये हमारी भी रक्षा कीजिये ॥१२॥

सुराणां रक्षायै सपदि पितुराज्ञां सकरूणां
समासाद्य प्रागाद् वनमनुजयुक्तो वनितया ।
जनस्थानं प्राप्यामलवटतरूणां फलवता—
मधश्चक्रे वासं दनुजकुलनाशाय च विभो! ॥ १३

अन्वयः—विभो ! पितुः सकरुणाम् आज्ञाम् समासाद्य अनुजयुक्तः वनितया सुराणाम् रक्षायै सपदि वनम् प्रागात् (तत्र) च जनस्थानम् प्राप्य दनुजकुलनाशाय फलवताम् अमलवटतरूणाम् अधः वासम् चक्रे ॥१३॥

हे विभो ? सर्वव्यापक! श्रीराम ? पितुः—जनकस्य श्री दशरथमहाराजस्य सकरुणाम्—सदयाम्, आज्ञाम्— निदेशम् समासाद्य प्राप्य, अनुजयुक्तः कनिष्ठभ्रातृलक्ष्मणसहितः,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किये रक्षण नहीं करते इस लिये उनसे बारंबार प्रार्थना करते रहना कि हे दीनबन्धो ! 'आप मेरे रक्षक बनें' मैं आपका अकिंचनदास हूं' इस प्रकार चतुर्थ शरणागतिका स्वरूप है. इस चतुर्थ प्रपत्ति में भगवत्प्रसाद द्वारा ताका बोध होता है।

५ आत्मनिक्षे नामकपंचम शरणागति है। अर्थात् 'अपने सर्वस्वरूप भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के लिये ही सब कुछ है' इस भावको हृदयस्थ करके आत्माको समर्पण करदेनेको ही आत्म निक्षेप वैष्णवाचार्योंने माना है इस पञ्चम शरणागति से अपने निस्तारका उपाय और फल इन दोनों में अपने प्रयत्न की निवृत्ति होती हैं और यह भाव उत्पन्न होता है कि फल प्रदान करना और उस फल के लिये उपाय करना यह दोनों हमारे सर्व विध-स्वामी भगवान् श्रीराम के अधीन है। इससे उपाय और फल इन दोनों में स्वाभीमान का निवृत्ति होती हैं।

६ कार्पण्य नामक छठी शरणागति है। इसका स्वरूप इस प्रकार है। अपने सवविध स्थिति से यह निवेदन करना है दीनरक्षक ! मैं ऐसाकर्म परायण भी नहीं हूं। न आत्मतत्वका ज्ञाता हूं और न आपके चरणमें उत्कट भक्ति ही रखता हूं। मैं तो बडा अकिंचन और अनन्यगतिक हूं, केवल आपके चरणोंका आश्रयी बना हूं मैं सर्वथा उपायादि में अक्षम हूं आप ही इस तुच्छ दास को कृपाकटाक्ष से पावन करें, उद्धार करें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Rcgd. N. GAMC 451

इस भाव को 'कार्पण्य' शरणागति समझना चाहिये। कहा भी है कि,

अहं भीतोऽस्मि देवेश ! संसारेऽस्मिन् भयावहे ।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष ! न जाने शरणं परम् ।

अर्थात् हे देवेश ! इस भयदायक संसारमें मैं बहुत भयाकुल हूं, हे कमलनयन ! मैं दूसरे किसीको मेरा रक्षक नहीं जानता। इसलिये आपही मेरा रक्षा कोजिये। इसी शरणागति को अन्यत्र इतिहास ग्रन्थोंमें बडे आग्रह के साथ महर्षियों ने इस प्रकार कहा है।

वृथैव भवनो याता भूयसो जन्मसन्ततिः ।
तस्यान्यतमं जन्म सञ्चिन्त्य शरणं व्रज ।

क्रमशः

मुद्रकः—श्रीरामानन्द प्रिंटिंग प्रेस, कांकरिया रोड, अहमदाबाद—२२
त्रिदण्डि संस्थान श्रीशेषमठ—धर्मप्रचार विभागसे धर्मप्रचार्थ प्रकाशित

प्रेषक—श्री कोसलेन्द्र मठ सरखेज राड
पो०पालडी, अहमदाबाद—३८०००७
ग्राहक नं.
प्रति श्री .....

३६८- पुस्तकालय
बाल्मीकि अध्ययन संस्थान
काठमाण्डू(नेपाल]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu